लाभदायक है ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती

डॉ. एस. पी. सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, रायगढ़ (छ.ग.)

मूंग ग्रीष्म एवं खरीफ दोनों मौसम की कम समय में पकने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। इसके दाने का प्रयोग मुख्य रूप से दाल के लिए किया जाता है, दलहनी फसलों में मूंग की बहुमुखी भूमिका है, इसमे प्रोटीन अधिक मात्रा में पाई जाती है, जो कि स्वास्थ के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मूँग के दानों में 25 प्रतिशत प्रोटीन, 60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 13 प्रतिशत बसा तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। इसमें बसा की मात्रा कम होती है और इसमें विटामीन बी कॉम्प्लेक्स, कैल्शियम, खाद्य रेशांक और पोटेशियम भरपूर होता है। रबी फसलों के बाद खाली हुए खेतों में ग्रीष्मकालीन मूंग या उड़द की खेती करके किसान लाभान्वित हो सकता है।

जलवायु

मूंग की खेती खरीफ एवं ग्रीष्म दोनों मौसम में की जा सकती है। फसल पकते समय शुष्क जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। फसल के लिए अधिक वर्षा हानिकारक होती है, ऐसे क्षेत्रों में जहां 60-75 सेमी. तक वार्षिक वर्षा होती है मूंग की खेती के लिए उपयुक्त हैं पर, मूंग की फसल के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। खेती हेतु समुचित जल निकास वाली दोमट तथा बलुई दोमट भूमि सबसे उपयुक्त मानी जाती इसकी।

भूमि की तैयारी

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिए रबी फसलों के कटने के तुरंत बाद खेत की 2-3 जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से कर पाटा लगाकर खेत को समतल एवं भुरभुरा बनावे। इससे उसमें नमी संरक्षित हो जाती है व बीजों से अच्छा अंकुरण मिलता है। दीमक कीट के प्रकोप से फसल के बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 20-25 किग्रा. प्रति हेक्टेअर की दर से मिट्टी में मिलाना चाहिए।

बीज दर एवं बोने का समय

ग्रीष्मकालीन मौसम में मूंग के लिए बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखना चाहिए तथा बोआई कतारों में 30 सेमी की दूरी पर करनी चाहिए। ग्रीष्मकालीन फसल की बोआई का समय फरवरी -मार्च है, फसल की बोआई 15 मार्च तक कर देना चाहिए। बोनी में विलम्ब होने पर फूल आते समय तापक्रम वृद्धि के कारण फलियां कम बनती हैं अथवा बनती ही नहीं है इससे इसकी उपज प्रभावित होती है। बोआाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। तत्पश्चात् इस उपचारित बीज को विशेष राईजोबियम कल्चर की 5 ग्राम. मात्रा प्रति किलो बीज की दर से परिशोधित कर बोनी करें।

उन्नत किस्मो का चयन

किस्म	अवधि (दिनों में)	सामान्य उपज क्षमता (क्विं/हे.)	विवरण
पूसा विशाल	60–65	10–12	ग्रीष्म एवं खरीफ दोनों के लिये उपयुक्त पौधे मध्यम आकार के (55–70 सेमी.) फली का साइज अधिक (9.5–10.5 सेमी. दाना मध्यम चमकीला हरा, पीला मोजेक रोग सहनशील
पूसा–9531	60–65	9–10	पीला मोजेक वायरस प्रतिरोधी, जायद मौसम के लिये उपयुक्त।
पूसा–105	75–80	10–11	दाना गहरा हरा, मध्यम आकार का, पीला मोजेक वायरस प्रतिरोधी, पावडरी मिल्ड्यू रोगो के लये सहनील, जायद मौसम के लये उपयुक्त
बी एम.–4	65–70	10–12	पीला मोजेक एवं पावडरी मिल्ड्यू सहनशील
मालवीय ज्योति (हम –1)	65–70	10–12	पीला मोजेक वायरस प्रतिरोधी,
एच.यू.एम.–12 (हम–12)	60–65	10–12	पीला मोजेक वायरस प्रतिरोधी,

खाद एवं उर्वरक

200 से 300 क्विंटल गोबर की खाद प्रति हेक्टयर की दर से खेत की तैयारी के समय डालना चाहिए। जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करके खेत को समतल कर लेना चाहिए। उर्वरको का प्रयोग मृदा परीक्षण के बाद मिट्टी की जरुरत के अनुसार ही करना चाहिए। दलहन फसल होने के कारण मूंग को कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है, मूंग के लिए 20 किलो नाइट्रोजन तथा 40 किलो फास्फोरस एवं 20 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर की आवश्कता होती नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश उर्वरको की पूरी मात्रा बुबाई के समय 5-10 सेमी. गहरी कूड़ में आधार खाद के रूप में दें।

सिंचाई

मूंग की ग्रीष्मकालीन फसल को 4-6 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20 से 25 दिन बाद और बाद में हर 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिचाई करते रहना चाहिए जिससे अच्छी पैदावार मिल सके जब फसल पूर्ण पुष्प अवस्था पर हो तो उस समय सिंचाई नहीं करना चाहिए एवं फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

मूंग की फसल में खरपतवार नियंत्रण सही समय पर नहीं करने से फसल की उपज में 40-60 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। फसल व खरपतवार की प्रतिस्पर्धा की क्रान्तिक अवस्था मूंग में प्रथम 30 से 35 दिनों तक रहती है। इसलिये प्रथम निदाई-गुड़ाई 15-20 दिनों पर तथा द्वितीय 35-40 दिन पर करना चाहियें। कतारों में बोई गई फसल में व्हील ही नामक यंत्र द्वारा यह कार्य आसानी से किया जा सकता है निराई-गुड़ाई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ साथ वायु का संचार होता है जो की मूलग्रंथियों में क्रियाशील जीवाणु द्वारा वायुमंडलीय नत्रजन एकत्रित करने में सहायक होती है। निम्न नींदानाशक रसायन का छिड़काव करने से भी खरपतवार का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। खरपतवार नाशक दवाओं के छिडकाव के लिये हमेशा फ्लैट फेन नोजल का ही उपयोग करें।

कीट नियंत्रण

मूंग की फसल में प्रमुख रूप से फली भृंग, हरा फुदका, माहू, तथा कम्बल कीट का प्रकोप होता है। पत्ती भक्षक कीटों के नियंत्रण हेतु क्विनालफास की 1.5 लीटर तथा हरा फुदका, माहू एवं सफेद मक्खी जैसे रस चूसक कीटो के लिए डायमिथोएट 1000 मि.ली. प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. प्रति 600 लीटर पानी में 125 मि.ली. दवा के हिसाब से प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

रोग नियंत्रण-

पीला मोजेक रोग: यह रोग विषाणु जनित है जिसका वाहक सफेद मक्खी कीट है जिसे नियंत्रित करने के लिये ट्रायएजोफॉस 40 ईसी, 2 मिली प्रति लीटर अथवा थायोमेथोक्साम 25 डब्लू. जी. 2 ग्राम प्रति ली. या डायमेथोएट 30 ईसी, 1 मिली.प्रति ली. पानी में घोल बनाकर 2 या 3 बार 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। रोग प्रतिरोधी अथवा सहनशील किस्मो जैसे टी.जे.एम. -3, के -851, पन्त मूंग -2, पूसा विशाल, एच.यू.एम. -1 का चयन करें। प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजो का प्रयोग करे।

सर्कोस्पोरा पर्णदाग

- रोग रहित स्वस्थ बीजो का प्रयोग करें। खेत में पौधे घने नही होने चाहिये पौधो का 10 सेमी. की दूरी के हिसाब से विरलीकरण करे।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर मेन्कोजेब 75 डब्लू. पी. की 2.5 ग्राम लीटर या कार्बेन्डाइजिम 50 डब्लू. पी. की 1 ग्राम /ली. दवा का घोल बनाकर 2-3 बार छिड़काव करें।

एन्थैक्नोज

- प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजो का चयन करें।
- फफूंदनाशक दवा जैसे मेन्कोजेब 75 डब्लू. पी. 2.5 ग्राम/ली. या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू. पी. की 1ग्राम/ली. का छिड़काव बुवाई के 40 एवं 55 दिन पश्चात करें प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजो का चयन करे।

चारकोल विगलन

- बीजोपचार कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू जी. 1 ग्राम प्रति किग्रा बीज के हिसाब से करें।
- 2-3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं तथा फसल चक्र में ज्वार, बाजरा फसलों को सम्मिलित करें।

भभूतिया (पावडरी मिल्ड्यू) रोग

- रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।
- समय से बुबाई करें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/ली. पानी की दर से छिड़काव करें। अथवा घुलनशील गंधक (3 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम(1 ग्राम) प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

★★★★

शाकनाशी रसायन का नाम	मात्रा (ग्रा. सक्रिय पदार्थ हे.)	प्रयोग का समय	नियंत्रित खरपतवार
पेन्डिमिथिलीन 30 ई.सी.	700 ग्राम	बुवाई के 0–3 दिन तक	घासकुल एवं कुछ चौडी पत्तो वाले खरपतवार
क्यूजालोफाप ईथाइल	40–50 ग्रा.	बुबाई के 15–20 दिन बाद	घासकुल के खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण